इकाई 4 प्रमुख साहित्यकार

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 बीसवीं शती के प्रमुख साहित्यकार

4.2.1 अखिलानन्द शर्मा, सखाराम शास्त्री, मेधाव्रत, बदरीनाथ झा,

4.2.2 क्षमाराव, भगवदाचार्य, काशीनाथ द्विवेदी, उमापति द्विवेदी, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र,

4.2.3 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री, बालकृष्ण भट्ट, सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानन्द शुक्ल

4.2.4 क्षेमधारि सिंह शर्मा, कालीपदतर्काचार्य, भोलाशंकर व्यास, रेवाप्रसाद द्विवेदी,

4.2.5 श्रीधर भास्कर, परमानन्द शास्त्री, राजेन्द्र मिश्र, माधव श्रीहरि, नारायण शुक्ल, रमेशचन्द्र शुक्ल, रामावतार मिश्र, रसिक बिहारी जोशी, सुबोध पन्त, विधाधर शास्त्री, कालिका प्रसाद शुक्ल, जग्गू बकुलभूषण (जग्गू अलवार अयंगाार) (अलवार अयंगार) (कर्णाटक)

4.3 सारांश

4.4 शब्दावली

4.5 संदर्भ ग्रन्थ सूची

4.6 बोध प्रश्न

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- प्रथम खण्ड की पूर्व की तीन इकाइयों के वर्णन क्रम में 20वीं शताब्दी के कुछ साहित्यकारों के बारे में अध्ययन करेंगें
- अखिलानन्द शर्मा, सखाराम शास्त्री, मेधाव्रत, बदरीनाथ झा, का परिचयात्मक उल्लेख कर सकेंगें
- क्षमाराव, भगवदाचार्य, काशीनाथ द्विवेदी, उमापति द्विवेदी, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र का परिचय दे सकेंगें
- गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री, बालकृष्ण भट्ट, सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानन्द शुक्ल के बारे में बता सकेंगें
- क्षेमधारि सिंह शर्मा, कालीपदतर्काचार्य, भोलाशंकर व्यास, रेवाप्रसाद द्विवेदी का परिचय बता सकेंगें
- श्रीधर भास्कर, परमानन्द शास्त्री, राजेन्द्र मिश्र, माधव श्रीहरि, नारायण शुक्ल, रमेशचन्द्र शुक्ल, रामावतार मिश्र, रसिक बिहारी जोशी, सुबोध पन्त, विधाधर शास्त्री, कालिका प्रसाद शुक्ल, जग्गू बकुलभूषण जग्गू अलवार अयंगाार, अलवार अयंगारकर्णाटक का उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में 17वीं शताब्दी से ही विद्वानों ने आधुनिक संस्कृत साहित्य का काल खण्ड माना है। आधुनिक संस्कृत में भी प्राचीन संस्कृत साहित्य की तरह रचनाओं का भण्डार है। इस इकाई में आप सभी के अध्ययन के लिए जिन रचनाओं और रचनाकारों का चयन किया गया है, वे मुख्यतः 20वीं शताब्दी के कवि हैं।

20वीं शताब्दी के कुछ साहित्यकारों का अति संक्षिप्त परिचय उपलब्ध वर्णन के आधार पर इस इकाई में प्रस्तुत किया गया है। महाकाव्य की रचना का क्षेत्र हो, मुक्तक काव्य, गीतिकाव्य आदि का क्षेत्र हो, सभी में रचनाएँ हुई हैं। प्रत्येक क्षेत्र में अधिसंख्य रचनाकार उपलब्ध हैं। प्रस्तुत इकाई में अग्रलिखित नामों का चयन किया गया है–अखिलानन्द शर्मा, सखाराम शास्त्री, मेधाव्रत, बदरीनाथ झा, क्षमाराव, भगवदाचार्य, काशीनाथ द्विवेदी, उमापति द्विवेदी, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री, बालकृष्ण भट्ट, सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानन्द शुक्ल क्षेमधारि सिंह शर्मा, कालीपदतर्काचार्य, भोलाशंकर व्यास, रेवाप्रसाद द्विवेदी, श्रीधर भास्कर, परमानन्द शास्त्री, राजेन्द्र मिश्र, माधव श्रीहरि, नारायण शुक्ल रमेशचन्द्र शुक्ल, रामावतार मिश्र, रसिक बिहारी जोशी, सुबोध पन्त, विधाधर शास्त्री,कालिका प्रसाद शुक्ल, जग्गू बकुलभूषण, जग्गू अलवार अयंगाार, अलवार अयंगार,कर्णाटकआदि।

प्रस्तुत इकाई में आप उपर्युक्त नामों से परिचित होकर उनकी रचनाओं के बारे में भी परिचयात्मक जानकारी प्राप्त करेंगे। इन साहित्यकारों का संक्षेप मे अध्ययन करने के पश्चात आप 20वीं शताब्दी के साहित्यकारों को बता सकेंगें।

4.2 बीसवीं शती के प्रमुख साहित्यकार

4.2.1 अखिलानन्द शर्मा, सखाराम शास्त्री, मेधाव्रत, बदरीनाथ झा,

अखिलानन्द शर्मा (1880–1955) वदायूं जिले में सनाढ्य ब्राह्ाण कुल में उत्पन्न, पं. टीकाराम के सुपुत्र कवि अखिलानन्द शर्मा ने प्रथम बार, आर्यसमाज के प्रतिष्ठापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के चरित को आधार बनाकर 'दयानन्द–दिग्विजय' नामक महाकाव्य का प्रणयन किया, जो इण्डियन प्रेस, प्रयाग से प्रथम बार 1906 में, और बाद में आर्यधर्मप्रकाशन, सामली से 1970 में प्रकाशित हुआ था। बाद में इसी विषय पर दिलीपदत्त शर्मा ने मुनिचरितामृतम् महाकाव्य (दर्शन प्रेस, ज्वालापुर) और मेधाव्रताचार्य ने दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य की रचना की।

सखाराम शास्त्री भागवत (महाराष्ट्र 1886–1935) कवि का जन्म करवार भूधर दुर्ग के निकट वेगड्.गा नदी के तटवर्ती ''गारगोटी'' ग्राम में हुआ। विविध शास्त्रों में निष्णात कवि भागवत के अन्तिम दिना सतारा में बीते। कवि ने कई स्तोत्र भी लिखे और 'ज्ञानेश्वरी' के चरमाध्यायषट्क का संस्कृत में अनुवाद भी किया, जो प्रकाशित नहीं हुए। इन्होंने अपने मित्रों को संस्कृत में पद्यबद्ध पत्र भी लिखे। ये अपनी रचना 'अहल्याचरित' महाकाव्य के पूर्ण होने के कुछ ही समय बाद दिवंगत हो गये। इसे गोविन्द रामचन्द्र राजोपाध्याय ने सतारा से 1927 में प्रकाशित किया। कवि के मन में त्रिस्थली–प्रयाग, काशी और गया की यात्राा के प्रसंग में अहल्या देवी द्वारा बनवाये गये धर्मशाला और विष्णु–मन्दिर को देखने के पश्चात् आलोच्य रचना के निर्माण का

संकल्प उदित हुआ था। ''कवि परमानन्द ने शिवभारत की रचना की तो इस कवि ने अहत्याभारत की''।

मेधाव्रत (महाराष्ट्र 1893–1964) नासिक जनपद के अन्तर्गत ''येवला'' में सनातनधर्मी परिवार में जनमे आचार्य मेधाव्रत की शिक्षा आर्य समाज के गुरुकुलीय वातावरण में हुई। इन्होंने आर्य कन्या विद्यालय, बड़ौदा के प्रधानाचार्य की। इनका संस्कृत में 'कुमुदिनीचन्द्र' नाम का उपन्यास है। इस कवि ने दयानन्ददिग्विजय तथा ब्रह्मर्षि विरजानन्दचरित नाम के दो महाकाव्यों का प्रणयन किया। दयानन्ददिग्विजय के पूर्वार्ध का प्रकाशन 1938 ई में आर्यकन्यामहाविद्यालय से तथा उत्तरार्ध का 1947 ई. में हुआ। उत्तरार्ध के प्रकाशक हैं– श्री सुबोधचन्द्र सत्यव्रततीर्थ विद्यालङ्कृत, जो गुरूकुल विद्यामन्दिर, सूपा (नवसारी) में अध्यापक रहे हैं। हम कह चुके हैं कि आचार्य मेधाव्रत की रचना के पूर्व स्वामी दयानन्द के जीवन पर आधारित दो महाकाव्य प्रकाश में आ चुके थे–एक अखिलानन्द शर्मा द्वारा लिखित दयानन्ददिग्विजय (1910) और दूसरा दिलीपदत्त शर्मा का मुनिचरितामृत (1918) ।

बदरीनाथ झा (बिहार 1893–1974) ''कविशेखर'' की उपाधि से विभूषित कविवर झा का जन्म मधुबनी मण्डल के सरिसब ग्राम में हुआ। यह ग्राम बहुत पहले से विद्वानों तथा कवियों की जन्मभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। पं झा ने विविध शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन करके साहित्य के क्षेत्र में अपनी सहजात विशिष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इन्होंने धर्मसमाजसंस्कृतमहाविद्यालय, मुजफ्फरपुर में साहित्य का अध्यापन किया। राधा–कृष्ण की में उपासना को समर्पित कविशेखरजी ने संस्कृत और मैथिली में अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया, जिनमें उल्लेखनीय हैं– संस्कृत का महाकाव्य "श्रीराधापरिणय" और मैथिली का एकावलीपरिणय। श्रीराधापरिणय महाकाव्य बीस सर्गों का है और इसका प्रकाशन 1939 ई में विजय प्रेस, मुजफ्फरपुर से हुआ।

कवि ने प्रथम सर्ग में पञ्चम जार्ज तथा मिथिलेश रमेश्वर सिंह के प्रति शुभाशंसा के पद्य लिखे हैं। सम्पूर्ण महाकाव्य एक ओर परम्परागत महाकाव्यविधा को आधार बना कर रचित है तो दूसरी ओर कविकी परिनिष्ठित भाषा और आर्द्र वैष्णव मानसिकता से ओतप्रोत होने के कारण एक आकलनीय कृति बन गया है। आरम्भ में अलङ्कारों का संयोजन जितनी अधिक मात्रा में हुआ है, बाद में भावों की प्रवणता के कारण तथा वर्णनों की सरसता के कारण कुछ शिथिल हो गया प्रतीत होता है। कविशेखर जी की भाषा प्राचीन कवियों की शैली तथा महाकाव्य की गरिमा के अनुरूप है। इसमें उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और अर्थान्तरन्यास के चामत्कारिक प्रयोग तो हैं ही, उन्नीसवें सर्ग के द्रुतविलम्बित छन्द में लिखे पद्य शिशुपालवध (माघ) के षष्ठ सर्ग के पद्यों की स्मृति को ताजा कर देने वाले प्रतीत होते हैं, जिनमें प्रभूत मात्रा में यमक का प्रयोग हुआ है।

4.2.2 क्षमाराव, भगवदाचार्य, काशीनाथ द्विवेदी, उमापति द्विवेदी, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र,

क्षमाराव (महाराष्ट्र 1890–1954) इनका जन्म पूना में हुआ। इनके पिता शदूकर पाण्डुरङ्ग पण्डित अपने समय के विशिष्ट विद्वान् थे। शिक्षा की व्यवस्था समुचित न होने पर भी अपने पिता के प्रभाव से क्षमा ने अंग्रेजी, मातृभाषा मराठी के अतिरिक्त संस्कृत पर अधिकार प्राप्त कर लिया था। उनका विवाह राघवेन्द्र राव एम डी के साथ हुआ। बहुत समय तक ये अंग्रेजी में लघु कथाएं लिखती रहीं, किन्तु 1931 के बाद संस्कृत में लेखन में प्रवृत्त हो गयीं। आधुनिक संस्कृत साहित्य के आकाश में एक

उज्ज्वल नक्षत्र के रूप में क्षमा का अभ्युदय हुआ। इनके नाम के साथ ''पण्डिता'' शब्द जस अनुस्यूत हो गया।कहना न होगा कि इनके द्वारा लिखित साहित्य का आकलन करने वाला आज भी हम भाव से यह अनुभव करता है कि विज्जिका, विजयाहूका, शीला भटूटारिका, अवन्तिसुन्दरी और विजयाहूका की परम्परा सुरक्षित है। पण्डिता क्षमा को स्वदेशाभिमान अपने पिता से मिला था तो सौन्दर्य अपनी माता उषा से। उन्होंने राष्ट्र भक्ति की भावना से स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के उद्देश्य से महात्मा गान्धी के यहाँ साबरमती आश्रम में प्रवेश लिया, किन्तु स्वास्थ्य के अनुकूल न होने की स्थिति में, अपने लेखन द्वारा साहित्य की समृद्धि के साथ देश की सेवा का कार्य किया। इनकी अनेक प्रकाशित कृतियों में महाकाव्य, लघु कथाएं, जीवनवृत्त आदि हैं। इनके महाकाव्य हैं– श्रीतुकारामचरित, श्रीरामदासचरित और श्रीज्ञानेश्वरचरित।

श्रीतुकारामचरितम् (1950), श्रीरामदासचरितम् (1953) और श्रीज्ञानेश्वरचरितम् (1955)– ये तीनों ही रचनाएं महाराष्ट्र के तीन महान् सन्तों के जीवन पर आधारित हैं।

भगवदाचार्य (पंजाब, 1880–1977) स्यालकोट (अब पाकिस्तान) में जनमे भगवदाचार्य का पूर्व नाम सर्वजित था। प्रारम्भ में अपने पितृव्य के साथ काशी में और बाद में भाई के पास रावलपिण्डी मे रहे। भाई से ही संस्कृत का ज्ञान अर्जित करना आरम्भ किया। कई भाषाओं में भी निपुण हुए। पुनः काशी जाकर संस्कृत के शास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन किया।

काशीनाथ द्विवेदी (उ.प्र., 1897–1969) "सुधीसुधानिधि" के उपनाम से विभूषित कवि द्विवेदी का जन्म वाराणसी में हुआ। इनके पिता पं रुद्रदत्त द्विवेदी गोरखपुर के निवासी थे, किन्तु वाराणसी में बस गये थे। कविवर द्विवेदी ने अपने पितृव्य पं. नकच्छेद राम द्विवेदी (पं. उमापति द्विवेदी) के चरणों में विद्याध्ययन किया तथा स्वामी मनीष्यानन्द भी इनके गुरु थे। इनके अत्यन्त निकटवर्ती मित्रों में ''कविपति" उमापति द्विवेदी थे। दोनों ने ही गांधीजी के द्वारा प्रवर्तित ''असहयोग आन्दोलन'' में भाग लिया था। कविवर द्विवेदी की अयाचितोपनतवृत्ति प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इन्होंने कई वर्ष केवल पत्तियां खाकर गुजार दिये थे!

उमापति शर्मा द्विवेदी (उत्तर प्रदेश, 1898–) देवरिया जनपद में उत्पन्न कवि द्विवेदी ने अपने जीवन काल में स्वातन्त्र्य संग्राम में अध्ययन छोड़कर भाग लिया था। बाद में अध्ययन में प्रवृत्त हुए अपनी काव्य–लेखन की सफल प्रवृत्ति के कारण इन्हें ''कविपति'' कहा गया। इनके द्वारा २१ सर्गों में लिखित पारिजातहरण महाकाव्य १६५७ ई. में प्रकाशित हुआ, जिसे प्रकाशित किया, श्रीललन शर्मा पाण्डेय, व्यवस्थापक गोस्वामी तुलसीदास महाविद्यालय, पड़रौना (देवरिया) ने।

विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र (बिहार) चम्पारण जिले के सरारा ग्राम के निवासी कविवर मिश्र ने काशी में ही अध्ययन और अध्यापन किये। ये भारतधर्म महामण्डल से जुड़े रहे। इन्होंने महाभारत और पद्मपुराण प्राप्त कर्ण और अर्जुन बीच युद्ध से सम्बद्ध कथानक को लेकर २२ सर्गों में कर्णार्जुनीय महाकाव्य की रचना की। इनकी दूसरी महाकाव्य–रचना महर्षिज्ञानानन्दचरित है, जो 23 सर्गों में प्रस्तुत हुई है तथा श्री–भारतधर्ममहामण्डल, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित है। इस दूसरे महाकाव्य के 1968 में प्रकाशन के पूर्व ही कविवर मिश्र दिवंगत हो गये।

'अर्वाचीनसंस्कृतमहाकाव्यानुशीलनम् (1981) के लेखक डॉ रहसविहारी द्विवेदी कोकर्णार्जुनीय महाकाव्य में साम्प्रतिक युगजीवन के सम्बन्ध में चित्रण नहीं मिला है। वस्तुविन्यास में कवि केवल पौराणिक शैली का अनुहरण करता है।

4.2.3 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री, बालकृष्ण भट्ट, सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानन्द शुक्ल

गोस्वामि बलभद्र प्रसाद शास्त्री (उत्तरप्रदेश) गोस्वामी प्रकाशन, सकाहा हरदोई से 1975 में प्रकाशित बारह सर्गों में रचित गोस्वामी जी का नेहरुयशः सौरभमहाकाव्य पं जवाहर लाल नेहरू के राष्ट्रिय चरित्र पर रचित संस्कृत की अनेक कृतियों में से एक है। परम्परागत महाकाव्य के लक्षणों पर निर्मित इस काव्य में कवि की समर्थ लेखनी यथास्थान प्रकट होती है। अपने काव्य नायक के चरित के वर्णन के माध्यम से कवि ने अपनी राष्ट्रभक्ति को भी इस रचना में अनुस्यूत किया है। कवि कहता है कि अपना अपमान, प्रतिभा का उपहास, भूसम्पत्ति और स्वर्ण–धन का अपहरण तथा विद्या–कला–संस्कृति का सर्वनाश देखता हुआ भी वह कौन है जो दासता को सहता है

आत्मापमानं प्रतिभोपहासं स्वसम्पदास्वर्णधनापहारम् ।
विद्याकलासंस्कृतिसर्वनाशं पश्यन्नसौ दास्यमपीहते कः ।।

बालकृष्ण भट (उत्तर प्रदेश) कवि भटूट का जन्म पर्वतीय क्षेत्र टिहरीवाल के जाखौली ग्राम में हुआ। इन्होंने अपने ही जिले के राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर सेवाकार्य किया था इनके द्वारा रचित सत्ताइस सग का क महाकाव्य स्वयं कवि द्वारा चार भागों में प्रकाशित कराया गया है (1952, 1954,1961, 1969) कवि भट्ट की ही दूसरी रचना भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति (1947) के अवसर पर रचित स्वतन्त्रभारतम् नाम का खण्ड काव्य (दो भागों में विभक्त) है। कवि ने इसे ''भारतस्वातन्त्र्यालोकः'' भी कहा है।

सत्यव्रत शास्त्री (1930) इनका जन्म लाहौर, जो अब पाकिस्तान का एक शहर है, में हुआ। आपके पिता चारुदेव शास्त्री विशेष रूप से पाणिनीय व्याकरण के अध्ययन के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त विद्वान् थे। देश के विभाजन के पश्चात् इन्होंने पिता के साथ अम्बाला और जालन्धर में रहकर अध्ययन किया। विशेष अध्ययन वाराणसी में किया तथा 1959 में दिल्ली विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग में विभिन्न पदों पर अध्यापन करते पद से अवकाश ग्रहण किया। आपकी रचना श्रीगुरुगोविन्दसिंह–चरित (1967) पर साहित्य हुए अकादमी पुरस्कार, 1968 में प्राप्त हुआ।

ब्रह्मानन्द शुक्ल (उत्तर प्रदेश, 1904–1970) मुजफ्फरनगर जिले के चरथावल ग्राम में जनमे कवि शुक्ल ने खुरजा के श्रीराधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय में साहित्य विभाग के अध्यक्ष के रूप में सेवा की। इनमें संस्कृत के पाण्डित्य के अतिरिक्त कवित्व का भी विशेष गुण था। इन्होंने अनेक कृतियां संस्कृत साहित्य को दीं, जिनमें लघुकाव्य श्रीगान्धिचरितम् भी है। इनकी अन्तिम रचना श्रीनेहरुचरित महाकाव्य है जो अट्ठारह सर्गों में निर्मित है, जिसका प्रकाशन शारदासदनम् 38 राधाकृष्ण, खुरजा (उ. प्र.) से 1969 में हुआ है।

4.2.4 क्षेमधारि सिंह शर्मा, कालीपदतर्काचार्य, भोलाशंकर व्यास, रेवाप्रसाद द्विवेदी

क्षेमधारिसिंह शर्मा (1893–1961) दर्शन (विशेषतरू शाक्तदर्शन) के अध्ययन–मनन के साथ उपासना में सहज प्रवृत्ति रखने वाले क्षेमथारिसिंह का जन्म मिथिला के राजपरिवार में हुआ। ये कवि के रूप में अपनी ख्याति से निरपेक्ष रहे और सही अर्थ में

स्वान्तः सुखाय ही काव्य रचना में प्रवृत्त हुए। इनकी दार्शनिक भाव वाली अनेक कृतियां अप्रकाशित रह गयीं। सुरथचरित महाकाव्य का प्रकाशन भी इनकी मृत्यु के पश्चात् हुआ। मार्कण्डेयपुराण के ८१ वें अध्याय से लेकर ६३ वें अध्याय में उपनिबद्ध देवी माहात्म्य, जिसे दुर्गासप्तशती के नाम से जाना जाता है, के प्रथम अध्याय और त्रयोदश अध्याय के कथाभाग को कवि ने आधार बनाकर १८ सर्गों में सुरथचरित महाकाव्य की रचना की, जो क्षेमधारिस्मृतिप्रकाशन, मधुबनी (बिहार) से 1967 में प्रकाशित हुआ।

कालीपद तर्काचार्य – (1888) इनका जन्म बंगाल (अब बांग्लादेश) के फरीदपुर जिले के कोटलिपारादृउनशिया ग्राम में हुआ था। इनका उपनाम काश्यपकवि था। ये मधुसूदन सरस्वती तथा हरिदास सिद्धान्तवागीश के वंशज थे। इन्होंने 1932 में कलकत्ता के संस्कृत कालेज में न्याय का अध्यापन किया तथा महामहोपाध्याय की उपाधि से भूषित हुए। इनके अनेक रूपक हैं तथा दो महाकाव्य हैं–सत्यानुभाव और योगिभक्तचरित। सत्यानुभाव प्रसिद्ध पौराणिक सत्यनारायण कथा पर आधारित एवं 24 सर्गों में रचित है। इसकी रचना सातवें दशक में हुई और संस्कृत साहित्य परिषद कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

भोलाशङ्कर व्यास (जन्म 1924) बूंदी राजस्थान के नरेशों के कुलगुरु–परिवार मेंफाल्गुन कृष्ण द्वादशी वि सं 1981 को जन्मे कविवर व्यास का आरम्भिक अध्ययन उनके पितामह पं गोवर्धन शास्त्री, पितृव्य कन्हैयालाल जी न्यायाचार्य तथा पिता शिवदत्त शास्त्री के घरके संस्कृत विद्यालय में सम्पन्न हुआ। बाद में इन्होंने पाश्चात्त्य पद्धति से अध्ययन करके काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र तथा भाषाशास्त्र का विशेष अध्ययन किया और इन विषयों पर ग्रन्थों का निर्माण भी किया। का.हि. विवि वाराणसी के हिन्दी विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं। इनके द्वारा हिन्दी में लिखित पण्डितराज जगन्नाथ के जीवन पर आधारित मौलिक उपन्यास ''समुद्रसङ्गम'' एक उत्तम कृति है।

रेवाप्रसाद द्विवेदी (मध्य प्रदेश, 1935) कविवर द्विवेदी का जन्म भोपाल के निकट ''नादनेर'' ग्राम में हुआ। विशेष अध्ययन के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आये और वहीं बाद में संस्कृत महाविद्यालय में प्राध्यापक हुए। आरम्भ में इनके अनेक काव्य और मौलिक साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रकाश में आये। ये कारयित्री तथा भावयित्री, दोनों प्रकार की प्रतिभा से सम्पन्न हैं। इनके दो महाकाव्य प्रकाशित हुए सीताचरित (1960) – जिसका प्र सं सागर वि.वि (सागर) की संस्कृत परिषद द्वारा प्रकाश में आया और उसका षष्ठ परिष्कृत संस्करण कालिदास संस्थान, २८ महामनापुरी, वाराणसी से उत्तरसीताचरितम् के नाम से 1990 में प्रकाशित हुआ है। दूसरा महाकाव्य स्वातान्त्र्यसम्भव उक्त कालिदास संस्थान से 1990 में प्रकाशित हुआ है, जिस पर कवि को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का प्रतिष्ठित पुरस्कार और के के विरला फाउण्डेशन, नई दिल्ली का वाचस्पति पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

4.2.5 श्रीधर भास्कर, परमानन्द शास्त्री, राजेन्द्र मिश्र, माधव श्रीहरि, नारायण शुक्ल रमेशचन्द्र शुक्ल, रामावतार मिश्र, रसिकबिहारी जोशी सुबोध पन्त, विधाधर शास्त्री, कालिका प्रसाद शुक्ल, जग्गू बकुलभूषण (जग्गू अलवार अयंगाार) (अलवार अयंगार), प्रभुदत्त शास्त्री

श्रीधर भास्कर वर्णेकर (महाराष्ट्र 1918) नागपुर में जन्मे कविवर वर्णेकर ने वहीं आरम्भ से विश्वविद्यालय पर्यन्त शिक्षा पायी और नागपुर विश्वविद्यालय में ही संस्कृत विभाग के प्राध्यापक हुए और बाद में अध्यक्ष हुए। इन्होंने संस्कृत की अनेक विधाओं में

लेखन के साथ, ''अर्वाचीन संस्कृत साहित्य'' नाम से मराठी में शोध–प्रबन्ध लिखा और 'संस्कृतभवितव्यम्' पत्रिका का सम्पादन किया। इन्हें काञ्चीपीठ के शंदूराचार्य ने 'प्रज्ञाभारती' की उपाधि से विभूषित किया, इनके साहित्य का संग्रह 'प्रज्ञाभरतीयम्' नाम से 1993 में समग्र रूप में प्रकाशित हुआ। इन्हें रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी सम्मान भी मिला।

परमानन्द शास्त्री (उ.प्र. 1926) कविवर शास्त्री का जन्म मेरठ जिले के ग्राम में हुआ। इन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद से अनवरपुर अवकाश ग्रहण किया ''संस्कृत गीत काव्य के विकास'' विषय पर शोध कार्य में कवि के लेखन एवं आलोचन के विषय रहे, हिन्दी कवि बिहारी, प्राकृतकाव्य गाथा सप्तशती सफल और धोयी कवि का पवनदूत इन्होंने संस्कृत में अनेक लघुकाव्यों के अतिरिक्त दो महाकाव्यों की रचना की जनविजयम् और चीरहरणम्। जनविजय का प्रकाशन स्वयं कवि द्वारा 1978 में किया गया और चीरहरण को भी स्वयं कवि ने 1983 में प्रकाशित किया। कवि को उनके चीरहरण महाकाव्य मध्यप्रदेश साहित्य परिषद ने 1985 में कालिदासपुरस्कार से पुरस्कृत किया है।

राजेन्द्र मिश्र (उ.प्र 1942) स्वातन्त्र्योत्तरकाल में संस्कृत साहित्य में जो अनेक प्रतिभाएं प्रतिष्ठित हुई उनमें, अनेक विधाओं में लिखने वाले ''अभिराज'' राजेन्द्र मिश्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कवि मिश्र का जन्म जौनपुर के द्रोणीपुर ग्राम में हुआ और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। वहीं संस्कृत विभाग में अध्यापन में लग गये और इन दिनों हिमाचल वि.वि., शिमला में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं। इनके कथासंग्रह "इक्षुगन्धा" पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और जानकीजीवन महाकाव्य पर के. के. बिरला फाउण्डेशन का ष्वाचस्पति पुरस्कारष प्राप्त हुआ है। उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी ने भी इनकी कई कृतियों को विशिष्ट पुरस्कार से पुरस्कृत किया है।

माधव श्रीहरि अणे (महाराष्ट्र, 1880–1968) पुणे के एक संस्कारशील परिवार में जन्मे लोकनायक बापूजी अणे भारतीय स्वातन्त्र्य के एक सेनानी तथा विद्वान् के रूप में प्रतिष्ठित थे। वे पुणे के तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के कुलपति रहे। बिहार राज्य के राज्यपाल के रूप में भी उन्होंने स्वतन्त्र राष्ट्र की सेवा की। उन्हें भारत के राष्ट्रपति ने 1968 में पद्मविभूषण अलङ्करण से विभूषित किया था। उनका कवि रूप उनके महाकाव्य, ''श्रीतिलकयशोऽर्णवः'' के प्रकाशन से लोक–विदित हुआ।

नारायण शुक्ल (उत्तर प्रदेश 1908) देवरिया जिले में खोण्डा ग्राम के निवासी कवि शुक्ल ने अपने ही जिले के एक संस्कृत महाविद्यालय में अध्ययन किया और श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, हाटा, (देवरिया) के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। कवि शुक्ल 'ऊर्मिलीयमहाकाव्य' का निर्माण किया जो उनके ही द्वारा 1973 में प्रकाशित हुआ महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की दृष्टि में वाल्मीकि द्वारा रामायण की उपेक्षिता नारी

रमेशचन्द्र शुक्ल (राजस्थान 1909–1995) अनेक विधाओं में अपनी रचना–प्रवृत्ति से आधुनिक संस्कृत साहित्य को जिन्होंने सम्पन्न करने का प्रयास किया उनमें कविवर शुक्ल अन्यतम है। धौलपुर में जनमे कवि शुक्ल ने अनेक स्थानों में अध्यापन किया। इनके द्वारा १४ सर्गों में रचित महाकाव्य 'सुगमरामायण' देववाणी परिषद् दिल्ली–56 से 1978 में प्रकाशित हुआ। कविवर शुक्ल का दूसरा ग्यारह सर्गों में निबद्ध महाकाव्य 'श्रीकृष्णचरित' देववाणी परिषद्, दिल्ली से ही 1979 में प्रकाशित हुआ।

रामावतार मिश्र (बिहार 1899–1984) कवि मिश्र गया जिले के टेकारी के पास बेनीपुर ग्राम के निवासी थे। किन्तु इनका जन्म निकटवर्ती ग्राम मखपा में इनके नाना के यहां हुआ। आप जब दो वर्ष के थे तभी आपके पिता का देहान्त हो गया। गया के पं. रमाप्रसाद मिश्र "रमेश" की शरण में रहकर 1923 में आपने साहित्योपाध्याय की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने व्याकरण, आयुर्वेद तथा ज्योतिष का भी अध्ययन किया। अपने गुरु के प्रति इनके मनमें अपार आदर का भाव था। अपने काव्यों के प्रकाशन के उपाय से विरत कवि मिश्र ने अनेक खण्डकाव्यों के साथ दो महाकाव्यों की रचना की।

रसिकबिहारी जोशी (1927) कविवर जोशी के पिता पं. रामप्रताप शास्त्री एक प्रतिष्ठित विद्वान् और वैष्णव कवि थे। कवि जोशी पर उनका वैष्णव संस्कार पर्याप्त रूप में पड़ा है, जो उनकी करुणाकटाक्षलहरी द्वारा अभिव्यक्त हुआ है। जोशीजी ने वाराणसी में अध्ययन किया और जोधपुर तथा दिल्ली विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों में अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित रहे। श्रीकृष्णभक्तिप्रवण रचनाओं के निर्माण में निपुण कवि जोशी का आठ सर्गों में लिखित 'मोहभङ्गम्' नाम का महाकाव्य 1978 में जोधपुर विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ। इस महाकाव्य का विष्णपुराण में प्राप्त मुनि सौभरि के आख्यान को कवि ने मूल आधार बनाया है। कवि के अनुसार, उसको उस आख्यान में जीवन दर्शन के 'युनिवर्सल' सत्य का अनुभव हुआ और वह उसके आधार पर महाकाव्य लिखने के लिए प्रेरित हुआ।

सुबोधचन्द्र पन्त (उत्तर प्रदेश, 1934) कवि पन्त ने आरम्भ में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी और बाद में प्रयाग के गङ्गानाथ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (नयी दिल्ली) के कार्यालयों में अधिकारी के रूप में सेवा की २२ सर्गों में लिखित इनका 'झांसीश्वरीचरित' महाकाव्य गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृ त विद्यापीड प्रयाग से 1979 में प्रकाशित हुआ। ''झांसीश्वरीचरितम्'' के रचनाकार श्रीपन्त एक सहजकविहृदय हैं। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई (1835–58) का नाम अमर है। कवि पन्त ने उन्हें देवी दुर्गा के अवतार के रूप में चित्रित किया है

दुर्गेव नारीजन इत्यवोचल्लोकस्य नेत्रे उदमीमिलच्च ।
यद् विस्मितोऽभूद् बत विस्मयोऽपि चक्रे समस्तं तददृष्टपूर्वम् ।।

विद्याधर शास्त्री (राजस्थान, 1901) अनेक छोटी बड़ी वैविध्यपूर्ण संस्कृत रचनाओं के निर्माण से संस्कृत क्षेत्र में प्रतिष्ठित कविवर शास्त्री का एक विशेष स्थान है। राजस्थान साहित्य अकादमी ने इनकी कुछ रचनाओं का संग्रह विद्याधरग्रन्थावली (1977) के नाम से प्रकाशित किया है। शास्त्री जी एक ओर अपनी महनीय परम्परा से जुड़े हैं तो दूसरी और नये युग के विचारों को बेहिचक आत्मसात् करते हुए प्रतीत होते हैं। "नवोत्साहो नवो भावो नवा दृष्टिर्नवा कृतिः'' की भावना से निर्माण में प्रवृत्त कविवर शास्त्री आधुनिक संस्कृत कवियों में अपनी एक अलग पहचान बना चुके हैं। इनका ''हरनामामृतम'' (संस्कृतजीवनम् नाम की काव्यावली का एक अंग) महाकाव्य १६ सर्गों में विभक्त है तथा पितामह पं हरनाम दत्त के जीवन चरित पर आधारित है। एक व्यक्ति के जीवन चरित पर लिखित होने पर भी इस रचना को कवि ने एक बड़ा सांस्कृतिक आयाम दिया है। कवि की भाषा सहज प्रवाहमय एवं प्रसादगुणयुक्त है। कवित्व के प्रदर्शन की ओर से कवि आद्योपान्त निरपेक्ष प्रतीत होता है। कवि के मन में ''नवीन'' के प्रति कुछ अतिरिक्तयुग–बोध का स्पर्श था, जो उसे लेखन के लिए प्रवृत्त करता था–

प्रतिक्षणं यत्र मतिर्नवीना गतिर्नवीनैव च यत्र नित्यम् ।
कथं न तस्मिन् नवमस्तु काव्यं युगे युगे नव्यविमर्शशीले ।।

कालिका प्रसाद शुक्ल (उत्तर प्रदेश, 1921) कुशीनगर के निकट मठिया ग्राम में उत्पन्न कवि शुक्ल सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में व्याकरण विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। उनका १३ सर्गों मे रचित श्राधाचरितश महाकाव्य (1985) कवि के रचनाशिल्प की प्रौढ़ि की परिचायक कृति है। कवि को इसके निर्माण के कारण साहित्य अकादमी (दिल्ली) का पुरस्कार भी मिल चुका है। कवि की दृष्टि 'राधा' के प्रति प्राचीन वैष्णव परम्परानुगत होने के कारण अतिशय भक्तिपरक हो गयी है। आज की आधुनिक साहित्य–चेतना की अभिव्यक्ति ढूंढ़ने वाले को इस रचना से कुछ निराशा अवश्य हो सकती है। किन्तु पञ्चमसर्ग में आये शिशिर ऋतु के वर्णन के पद्य कवि के प्रति किञ्चित् के अतिरिक्त आकर्षण उत्पन्न करते हैं। –

शिशिरशिशिरवातबाणविद्धा अपि हलिनः शतपर्णसर्ववस्त्राः ।
निखिलनिशि पलालजालतल्पा असुमिव सस्यमवन्ति वह्निसाध्याः ।। ५६५७

जग्गू बकुलभूषण (जग्गू अलवार अयंगार) (अलवार अयंगार) (कर्णाटक 1902–1993)

संस्कृत में कई दशकों से लेखन में प्रवृत्त श्री बकुलभूषण का १५ सर्गों का 'अद्भुतदूतम' महाकाव्य 1968 में प्रकाशित हुआ। इसके साथ रत्नप्रभा नाम की संस्कृत भी प्रकाशित है। कवि ने महाभारत के उद्योग पर्व की मूल कथा, जिसमें श्री कृष्ण पाण्डवों के दूत बन कर कौरवों की सभा में जाते हैं, को आधार बनाया है। बकुलभूषण ने साहित्य की अनेक विधाओं गद्यकाव्य, चम्पू, नाटक, गीत तथा स्त्रोत्र में रचना की। किन्तु इनकी सर्वतोभावेन अभिनंद्य रचना अद्भुतदूतम् है कवि ने श्रीकृष्ण को एक मानव रूप में चित्रित न करके ''अवतार'' के रूप में चित्रित किया है और यह बात सम्पूर्ण रचना में ही अभिव्यक्त होती है। कवि की दृढ मान्यता है कि स्वयं पाण्डवदूत उन भगवान् (श्रीकृष्ण) ने अपने को इस कैङ्कर्य में लगाते हुए, उसकी सरस एवं सफल रचना को भगवच्चरणकमलमधुस्पन्दसन्दोह से समाप्लावित (करके) यथार्थ रूप से इसे बनाया है–(देखें, ग्रन्थकुर्तुविज्ञापनम्)। कवि ने आद्योपान्त पठनीय इस रचना को सब ओर से एक व्यवस्थित रूप दिया है। वह "महाकाव्य'' लेखन की परम्परागत मान्यता का अनुसरण भी करता है। श्रीकृष्ण पाण्डवों के दूत बनकर कौरवों की सभा में जाते हैं, किन्तु उनका "रोल" एक राजदूत का नहीं, प्रत्युत एक भयंकर युद्ध को रोकने के लिए एक प्रकार का, दैवी चेतना की ओर से प्रयास है। श्रीकृष्ण अपने अग्रज बलराम के साथ आकर पाण्डवों से मिलते हैं। विराट्र नगर में तेरहवें वर्ष के अज्ञातवास की पूर्ति के लिए द्रोपदी के साथ पाण्डव निवास कर रहे थे। अभिमन्यु का विवाह हो चुका था। पाण्डवों के मन में युद्ध की भावना भड़क रही थी। वे उपप्लव्य नाम के स्थान पर आ गये थे। वहीं श्रीकृष्ण और बलराम पहुंचते हैं। धर्मराज उनके बाल्यकाल के कृत्यों की चर्चा करते हुए उनका स्वागत करते हैं और प्रजावर्ग में क्षोभ की सम्भावना की कामना करते हैं। युद्ध की विभीषिका या परिणति की चर्चा करते हैं। दोनों की सन्धि में ही वे कल्याण समझते हैं और बड़ी विनम्रता के साथदौत्य के लिए प्रार्थना करते हैं। श्रीबलराम, भीम और अर्जुन धर्मराज युधिष्ठर के का समर्थन करते हैं। किन्तु द्रोपदी की मनःस्थिति भिन्न है। अब श्रीकृष्ण उसे सान्त्वना देते है। अन्त में वह भी यह कहती है

सफलीकुरुष्प विनाश्य पापानू परिपाल्य साधून् ।

प्रभुदत्त शास्त्री (राजस्थान, 1892–1972) अलवर जनपद के ततारपुर म उत्पन्न शास्त्री जी ने दिल्ली में अध्यापन किया और वर्तमान शताब्दी के सातवें श्गणपतिसम्भव महाकाव्य (1968) की रचना की दस सर्गों में रचित इस महाकाव्य उन्होंने आद्योपान्त केवल शार्दूलविक्रीडित छन्द का उपयोग किया है, किन्तु सर्गान्त में बदल दिये हैं। कालिदास की रचना ''कुमारसम्भव'' जो भगवान् शिव के छोटे पुत्र (कार्तिकेय) पर आधारित है जबकि प्रस्तुत रचना ''गणपतिसम्भव'' शिव के बड़े पुत्र गणपति पर कवि के अनुसार, कुमार कार्तिकेय की प्रसिद्धि तो कम लोगों तक है, किन्तु गणपति को आबालवृद्ध, सभी लोग यहां तक कि हल चलाने वाला कृषक का बालक भी जानता है, ऐसे प्रसिद्ध गणपति के पौराणिक आख्यान को आधार बनाकर रचित यह महाकाव्य कविवर शास्त्री जी का अनूठा प्रयास हैं, क्योंकि इसके कथानक की संरचना में उन्होंने अपनी कल्पना–शक्ति का पूरा अपयोग करके परिवर्धन और परिवर्तन किये हैं। कथानक से सभी पात्र अपने आपमें दिव्य होते हुए भी यहां प्रतीक रूप में चित्रित हैं, जैसे गणेश, राष्ट्र की रक्षा के लिए शिर कट जाने पर भी जीवित रहने वाले आदर्श नायक हैं, पार्वती भारतमाता हैं तथा शिव राष्ट्र आदि के कठोर परीक्षक। सम्पूर्ण रचना में भारत की आध्यत्मिकता, योग तथा राष्ट्रीय भक्ति–धारा उन्मीलित हैं। (दरलप्रथम सर्ग में हिमालय का वर्णन है जो कवि की अपनी अनुरूप कल्पनाशक्ति।

4.3 सारांश

अखिलानन्द शर्मा बहुत दिन तक रहे जिन्होंने 21 सर्गों में दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य की रचना की इस काव्य में उन्होंने काव्य के नायक के रूप में स्वामी दयानन्द को प्रतिष्ठित किया है। सखाराम शास्त्री ने भी अनेक रचनाएं की। अहल्या चरित इन्ही की रचना है। इसी क्रम में आचार्य मेधाव्रत का नाम आता है। जिनकी रचनाएं मान्य हुई। बद्रीनाथ झा को कविशेखर की उपाधि मिली थी। इसी क्रम में आपने पंण्डिता क्षमाराव के बारे में भी अध्ययन किया है जिन्होंने बहुत दिन तक रहते हुए अनेक रचनाएँ की। गंगाप्रसाद उपाध्याय भी इसी क्रम में आते हैं। काशीनाथ द्विवेदी का जन्म वाराणसी में हुआ था जिन्होंने भी रचनाएं की। उमापति शर्मा वस्तुतः उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद में जन्म लिये थे, इन्होंने भी महाकाव्य की रचना की। इसी क्रम में बिहार के चम्पारण जिले के बिन्धेश्वरी प्रसाद मिश्र का नाम आधुनिक संस्कृत साहित्य में आता है। जिनके बारे में आपने इस इकाई के अध्ययन से जाना है। इस प्रकार प्रमुख साहित्यकार नामक इस इकाई के अध्ययन से आप निम्नलिखित साहित्यकारों के बारे में संक्षेप में जानकारी प्राप्त कर, इनका परिचय, समय व इनकी रचनाओं का नाम बताते हुए वर्णन कर सकेंगें। सभी के नाम इस प्रकार हैं–

अखिलानन्द शर्मा, सखाराम शास्त्री, मेधाव्रत, बदरीनाथ झा, क्षमाराव, भगवदाचार्य, काशीनाथ द्विवेदी, उमापति द्विवेदी, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री, बालकृष्ण भट्ट, सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानन्द शुक्ल क्षेमधारि सिंह शर्मा, कालीपदतर्काचार्य, भोलाशंकर व्यास, रेवाप्रसाद द्विवेदी, श्रीधर भास्कर, परमानन्द शास्त्री, राजेन्द्र मिश्र, माधव श्रीहरि, नारायण शुक्ल रमेशचन्द्र शुक्ल, रामावतार मिश्र, रसिक बिहारी जोशी, सुबोध पन्त, विधाधर शास्त्री,कालिका प्रसाद शुक्ल, जग्गू बकुलभूषण, जग्गू अलवार अयंगाार, अलवार अयंगार,कर्णाटकआदि।

4.5 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत–वाड्.मय का बृहद् इतिहास, सप्तम–खण्ड आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रकाशन उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान।
2. संस्कृत–वाड्.मय का बृहद् इतिहास, पंचम–खण्ड आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रकाशन उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान।

4.6 बोध प्रश्न

1. किन्ही पॉच नामों का उल्लेख करते हुए 20वीं शताब्दी के कुछ प्रमुख रचनाकारों में उनका स्थान निरूपित किजिए।
2. आधुनिक संस्कृत साहित्य में क्षमाराव, बद्रीनाथ झा, के योगदान का निरूपण कीजिए।
3. महाराष्ट्र के आधुनिक संस्कृत साहित्य के कवियों का वर्णन कीजिए।
4. आधुनिक संस्कृत साहित्य के महाकाव्यकारों पर संक्षेप में निबन्ध लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY